The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षक-छात्र अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध एवं आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति के संयोजन की उपादेयता

Shweta Tiwari[1], Laxmi Mishra[2] & Pawak Agrawal[3]

[1]Research Scholar, Department of Teacher Education, Prof. H.N. Mishra College of Education affiliated with Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh, Bharat, shwetat125@gmail.com

[2]Junior Research Fellow, Department of Education, Dayanand Anglo-Vedic P.G. College affiliated with Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh, Bharat; ORCID ID: https://orcid.org/0009-0007-8526-306X

[3]Senior Research Fellow, Department of Education, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh, Bharat; ORCID ID-0009-0002-6946-5001

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444835

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 15-05-2026

Accepted: 30-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान परंपरा, अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध, आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र, वैदिक ज्ञान, बहुविषयकता

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षक-छात्र अंतर्वैयक्तिक संबंध और आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों का संयोजन एक व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो समकालीन आवश्यकताओं के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करता है (शर्मा, 2018)। भारतीय ज्ञान परंपरा, प्राचीन ज्ञान और समग्र शिक्षा पद्धतियों से समृद्ध है, जो सभी ज्ञान की अंतर्संबंधता, नैतिकता और नैतिक शिक्षा के महत्व पर जोर देती है। गुप्ता एवं सिंह (2016) के अनुसार यदि भारतीय ज्ञान एवं परंपरा को मजबूत शिक्षक-छात्र अंतर्वैयक्तिक संबंधों के साथ एकीकृत किया जाए तो यह एक ऐसे सीखने के वातावरण का निर्माण कर सकती है जो पोषणकारी, सम्मानजनक और विद्यार्थियों के समग्र विकास के अनुकूल होगा। ये संबंध एक समृद्ध एवं सशक्त शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है, जहाँ विद्यार्थी मूल्यवान समझे जाने का अनुभव करते हैं,

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

जिससे उनकी प्रेरणा और संलग्नता में वृद्धि हो सकती है। भारतीय ज्ञान परंपरा महज एक संकल्पना नहीं अपितु यह संपूर्ण राष्ट्र को गौरवान्वित करने की क्षमता समेटे हुए है। भारतीय ज्ञान परंपरा समृद्ध ज्ञान, विज्ञान एवं प्रज्ञा को परिपोषित करता है, जिसमें ज्ञान, विज्ञान, अलौकिक, पारलौकिक, कर्म, धर्म, भोग, त्याग का अद्भुत समन्वय व्याप्त है। भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित जो भी ज्ञान है वह मन को शांत, शुद्ध करने वाला, संयमशील और ध्यान धारणा से परिपूर्ण है। इसी भारतीय ज्ञान एवं परंपरा के कारण ही हमारी शिक्षा प्रणाली वैदिक काल से ही सशक्त रही है। इस प्राचीन ढांचे में आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षण पद्धतियों को शामिल कर इसे अर्वाचीन बनाया जा सकता है। प्रौद्योगिकी-संवर्धित शिक्षण उपकरण व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकते हैं, संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच और एक आकर्षक मंच प्रदान कर सकते हैं, जो अधिगम क्रियाकलापों को अधिक आकर्षक और प्रभावी बना सकती है। ये विधियाँ अधिक लचीले और अनुकूल शैक्षिक दृष्टिकोण की राह आसान कर सकती है, जो विविध शिक्षण शैलियों और आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और आधुनिक प्रौद्योगिकियों के बीच सामंजस्य एक संतुलित शैक्षिक प्रतिमान बना सकता है जिसमें अतीत के सम्मान के साथ-साथ भविष्य को भी अपनाने की भी क्षमता विद्यमान होगी। हमारी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली उच्च मानवीय मूल्य, विशिष्ट वैज्ञानिक गुण, एवं तकनीकीयुक्त कौशल प्रदान करने में सक्षम है। भारतीय परंपरा से ओत-प्रोत बहुविषयक ज्ञान शिक्षा के संपूर्ण विकास को जड़ से शीर्ष तक, मानव से मानवता तक की राह को समन्वित करता हैं। प्रोफेसर रामचंद्र गुप्त की पुस्तक ‘भारतीय शिक्षा का इतिहास’ में भारतीय ज्ञान परंपरा और तकनीकीयुक्त उच्च शिक्षणशास्त्र के संबंध को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बताया गया है। इसी संदर्भ में ‘राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006)’ के प्रतिवेदन में भारतीय ज्ञान परंपरा और तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र के संबंध को शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी कारक के रूप में माना गया है। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की पुस्तक ‘इंडिया

2020’ में भारतीय ज्ञान परंपरा और तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र के संबंध को भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए एक अनवरत कारक के रूप में संकलित किया गया है। यूनेस्को की रिपोर्ट, ‘एजुकेशन फॉर ऑल, 2015’ में भी शिक्षा की पहुँच और तकनीकी संसाधनों के उपयोग करने की वकालत की गयी है। इसी संदर्भ में इस शोध पत्र का केंद्रीयकरण वर्तमान परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के अविरामी स्वरूप, शिक्षक-छात्र अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध एवं आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति के संयोजन की उपयोगिता को दर्शाता है।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी शिक्षा प्रणाली का प्रस्थानिक बीज बिंदु है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उसकी प्रदीर्घ पृष्ठभूमि समन्वित है। भारतीय ज्ञान संपदा विश्व के लिए सदैव उपलब्ध रही हैं। प्राचीन काल से ही, भारत ने हमेशा माना है कि शिक्षा अपने नागरिकों को सशक्त बनाने और सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने का एकमात्र तरीका है, और यही कारण है कि लगभग हर सरकार ने इस शिक्षा प्रणाली को प्रभावशाली बनाने के लिए कम से कम कुछ बदलाव किए हैं। इसी कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को वर्तमान तकनीकी से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है जिससे शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाया जा सके और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। इतनी विशाल विविधता वाले राष्ट्र को एक साथ बांधने और समाज की गुणवत्ता में सुधार करने का एकमात्र तरीका शिक्षा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, “उच्चतम शिक्षा केवल ज्ञान ही प्रदान नहीं करती वरन हमारे जीवन के सभी अस्तित्व के साथ सामंजस्य बिठाती है।” प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विचार की इस समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में प्रतिबिंबित किया जा सकता है। कौशलों के संवर्धन को उजागर करते हुए के. (2024) के अनुसार शैक्षणिक प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों में सैद्धांतिक ज्ञान, व्यावहारिक कौशल और आध्यात्मिक कौशल के साथ-साथ उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित कर उन्हें विश्व दृष्टिकोण का आकार प्रदान करना है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों में ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन शामिल हैं जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण का प्रसारण करता है। इसी श्रृंखला में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी भारतीय ज्ञान एवं परंपरा पर विशेष बल देती है। जो बिन्दुवार बताती है कि ‘भारत के ज्ञान’ में प्राचीन भारत का ज्ञान, उसकी सफलताएँ, शिक्षा, शिक्षक-छात्र अंतर्वैयक्तिक संबंध, तकनीकीयुक्त शिक्षण पद्धतियां और वास्तव में जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की भावना समाहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा को एक विषय के रूप में शैक्षणिक संस्थानों में शामिल किया गया है इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भी अत्यंत बल दिया है। भारतीय ज्ञान की समृद्धता के कारण बहुविषयक पाठ्य सामग्री का

संचालन सहज हो गया है। प्राचीन काल में शिक्षक विभिन्न तरह की शिक्षण सामग्री तथा विषय वस्तु का प्रयोग करके विद्यार्थियों तक ज्ञान का संचरण करता था किंतु आधुनिक युग में तकनीकी युक्त शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रिया के प्रयोग से ज्ञान का विस्तारण करना रुचिकर, सहज एवं सरल हो गया है। शिक्षक शिक्षण की प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपादित करने के लिए उच्च कोटि की तकनीकियों का प्रयोग करता है। यारयचेव एवं मेंटसीव (2020) के अनुसार, वर्तमान जीवन शैली में दुनिया भर से संपर्क बनाए रखने एवं शैक्षिक व्यवस्था में रोचकता व सजीवता लाने हेतु पारंपरिक प्रशिक्षण के अलावा तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र को समन्वित महत्व दिया जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिचय, पृष्ठ सं. 3 के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र शिक्षा की गुणवत्ता एवं समग्रता को समाहित करती है और इसी परिदृश्य को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य में प्रतिबिंबित किया गया है, जो समाकलित एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति को सुनिश्चित करने के अवसरों पर केंद्रित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र में अटूट संबंध है। भारतीय ज्ञान प्रणाली मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव डालती है और इसका ध्येय मानव का परिपूर्ण विकास करना है। तकनीकी शिक्षणशास्त्र भी शिक्षा को एक साधन के रूप में परिभाषित करता है, जो मनुष्य को अपना पूर्ण जीवन सुसंस्कृत एवं प्रभावशाली बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली मुख्यत: ज्ञान प्राप्ति, व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक सरोकार की भावना को विकसित करती है और तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र भी इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा का प्रयोग करता है, भले ही इसके तरीके भिन्न हो सकते हैं। प्राचीन परंपरा में शिष्य गुरु के मार्गदर्शन में ही विद्या ग्रहण करता था। तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र में इस प्रणाली के पदचिन्ह को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है, इसमें तकनीकी साधनों जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों को समाहित करके ज्ञान की परंपरा को रोचक, प्रभावशाली व उत्पादक बनाया जाता है। यह एकीकृत दृष्टिकोण न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि विद्यार्थियों को एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ आधुनिक दुनिया की जटिलताओं के दुर्गुणों को दूर करने के लिए तैयार करता है। यह आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को प्रोत्साहित करता है, जो आज के वैश्वीकृत और तीव्र गति से परिवर्तनशील वातावरण में आवश्यक योग्यताएँ हैं। पारंपरिक ज्ञान को महत्व देकर और शैक्षिक प्रक्रिया के भीतर मजबूत अंतर्वैयक्तिक संबंधों को बढ़ावा देकर, साथ ही आधुनिक प्रौद्योगिकी के लाभों का लाभ उठाकर, यह दृष्टिकोण एक अधिक समग्र, समावेशी और अनुकूलित शैक्षिक अनुभव को बढ़ावा देता है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के खंड 6.20 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि, भारतीय ज्ञान परंपरा को आधार स्तंभ बनाकर हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विस्तृत पाठ्यक्रम में मूल्य एवं शांति शिक्षा का समावेशन किया है, जो छात्रों में

सहानुभूति, सहिष्णुता, परोपकारिता, मानव अधिकार, लैंगिक समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता जैसे मानवीय मूल्यों की शिक्षा देती है, जिसमें संस्कृति, धर्म, भाषा, लिंग, इत्यादि के बारे में विस्तृत ज्ञान एवं विविधता के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण दिखाई देता हैं।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

पूर्व में हुए शोध अध्ययन में नंदिता एवं ऐथल (2023) ने प्राचीन कालीन शिक्षा की महत्ता को बताते हुए कहा है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्राचीन शिक्षा का बहुविषयक एवं समग्र प्रभाव व्यापक रूप से दिखाई देता है। इसी क्रम में मधलालोज़ एवं म्लाम्बो (2023) के अनुसार तकनीकी एवं शिक्षा के अंतर्संबंधों पर चर्चा करते हुए बताया गया है कि टेक्नोलॉजी विद्यार्थियों के शैक्षणिक और बौद्धिक क्षितिज को व्यापक बनाता है, जिससे छात्र कक्षा में अधिक बहुमुखी बनते हैं। विभिन्न प्रकार के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का उपयोग शैक्षिक वातावरण को बेहतर बनाता है। भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के क्षेत्र में मन्दावकर (2023) के अनुसार देश की समृद्ध विरासत एवं पारंपरिक ज्ञान की सक्रियता के साथ-साथ समकालिक सामाजिक मुद्दों का समाधान करने में भारतीय ज्ञान परंपरा उचित मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय संस्कृति की जड़े पुष्पित एवं पल्लवित सौंदर्य वृक्ष के समान विस्तृत है। जिसकी अथाह सीमा एवं पराकाष्ठा का अनुमान लगाना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। इसी क्रम में, खान एवं शर्मा (2024) के शोधानुसार भारतीय ज्ञान परंपरा एक नवोन्वेषी इकाई के रूप सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, ज्ञान को संरक्षित एवं प्रसारित करने का कार्य करती है। इसी क्रम में, किसी शिक्षक के लिए शिक्षणशास्त्र रीढ़ की हड्डी के समान है। इस तकनीकी के युग में बहुआयामी शिक्षणशास्त्र ही शिक्षक का आधुनिकीकरण करती हैं। उसमानोव (2024) के अनुसार, 21वीं सदी का वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान ने नैदानिक दृष्टिकोण विकसित करने के साथ-साथ नवोन्मेषी उपागम के प्रयोग से शिक्षकों की रचनात्मकता, आत्म विकास, पेशेवर दक्षता में वृद्धि की है। अंततः इन सभी अध्ययनों से भारतीय ज्ञान एवं परंपरा के अनेकानेक पहलुओं के विस्तृत विश्लेषण से इसके दीर्घकालिक विस्तार का अंदाजा लगाया जा सकता है। जो एक सशक्त, प्रबुद्ध एवं मानवीय समाज के पुनर्निर्माण में भविष्योन्मुखी प्रतिभा को प्रतिबिंबित करती है।

शोध विधि

इस अध्ययन में गुणात्मक शोध का प्रयोग किया गया है। इस शोध पत्र के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षक-छात्र अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध एवं आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति के संयोजन की उपादेयता को संदर्भित किया गया है। इन संप्रत्ययों के गूढ़ अध्ययन के साथ-साथ इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का भी आलोचनात्मक ढंग से विश्लेषण करना शामिल है। इस प्रकार यह शोध विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हुए अन्वेषण विधि पर केंद्रित है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के संप्रत्यय की विवेचना करना।
2. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान संदर्भ में शिक्षक छात्र अंतर्वैयक्तिक संबंध की अवधारणा प्रस्तुत करना।
3. वर्तमान तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति का विश्लेषण करना।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति की समन्वित व्यवस्था की उपादेयता की विवेचना करना।

भारतीय ज्ञान परंपरा

"अध्यात्मविद्या विद्यानाम"

अर्थात सभी स्वर्ण धनों में अध्यात्म रूपी धन ही प्रधान धन है। ऐसा सर्वविदित है कि संस्कृति के ऊषाकाल से ही भारतीय ज्ञान परंपरा क्षितिज पर रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा आज के भौतिकवादी युग में वैश्विक स्तर पर मानव समाज को जीवन यात्रा के लिए आदर्श दृष्टिकोण प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत वेद, वेदांग, ब्राह्मण ग्रंथ, पुराण, स्मृतियां, उपनिषद, वेदांत आदि ग्रन्थों का उत्कृष्ट समाकलन निहित है। प्राचीन ज्ञान धारा शाश्वत एवं अजेय है जो अव्यक्त शाश्वत अस्तित्व से निकलकर अभिव्यक्तियों के विभिन्न स्तरों के माध्यम से बहती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संपूर्ण ज्ञान प्रसारित कर रही है। प्राचीन ज्ञान परंपरा स्वयं को जानने की प्रक्रिया में सभी अभिव्यक्तियों को जन्म देती है। जिस प्रकार सूर्य की चमक सदियों काल तक व्याप्त रहेगी, ठीक उसी प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा व्यक्तियों के रोम-रोम में बसा रहेगा। इसे किसी भी प्रकार के बादलों की चादर द्वारा ढकना अक्षम है। प्राचीन ज्ञान परंपरा में ज्ञान के तीन आयाम ज्ञाता, जानने की प्रक्रिया और ज्ञेय हैं। वैदिक ज्ञान में ज्ञाता को ऋषि कहा जाता है, देवता और ज्ञेय के जानने की प्रक्रिया को, ज्ञान की वस्तु को छंद कहा जाता है। ऋषि, देवता और छंद इन तीनों की समग्रता को ज्ञान 'वेद' कहा जाता है। शर्मा (2024) के अनुसार, भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित है कि 'ज्ञानम् चेतनायाम् निहितम' अर्थात ज्ञान सीखने वाले की चेतना में निहित होता है।

भारतीय संस्कृति में भी एक उक्ति वर्णित है:

यस्य नास्तिस्वयं प्रज्ञाशास्त्रं तस्य करोतिकिम्।

लोचनाभ्यां विहीनस्यदर्पणः किं करिष्यति।

अर्थात उस व्यक्ति के लिए शास्त्र/पुस्तकें किसी काम की नहीं जिसकी चेतना दर्पण की भांति जागृत नहीं अर्थात वह दृष्टिहीन है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत आने वाले ग्रंथ

- अर्थशास्त्र
- योग सूत्र
- वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद)
- उपनिषद
- पुराण
- रामायण
- महाभारत
- भगवत गीता
- आयुर्वेदिक ग्रंथ जैसे
- चरक संहिता आदि।

शिक्षक छात्र अंतर्वैयक्तिक संबंध

शिक्षक और शिक्षा के द्वारा वैयक्तिक, सामाजिक एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उस सामंजस्य की भावना को जाग्रत करने में ऋग्वेद की ऋषिप्रज्ञा का वक्तव्य-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मानसि ज्ञानतम,

देवभाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।

समानो मत्र समितः समानी मनः सह चिनतेयेषाम,

मन्मात्रि मन्त्रये व् सयानेन वे हविषा जुहोयि। सयानी व आकृति: समानाः हन्नयानि वः, सयानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

अर्थात् भारतीय ज्ञान परंपरा हमें सिखाती है कि हम परस्पर एक होकर रहें, परस्पर मिलकर वार्तालाप करें। समभाव मन से ज्ञान प्राप्त करें, जिस प्रकार श्रेष्ठ जन एक होकर उपासना करते हैं, उसी प्रकार से हम भी अपना विरोध त्यागकर अपना काम करें। इस प्रकार की शिक्षा का विकास तभी हो सकता है जब शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य परस्पर सौहार्दपूर्ण एवं मधुर संबंध हों, जैसे गुरुकुल व्यवस्था में पाए जाते थे। परंतु आधुनिक युग में तकनीकी युक्त शिक्षणशास्त्र के प्रयोग से शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य पारस्परिक

सकारात्मक संबंध एवं व्यक्तिगत सहायता के साथ-साथ सुधारात्मक उपाय भी प्रस्तुत किए जाते हैं। इसी संदर्भ में भारत के मिसाइल मैन डॉक्टर ए.पी.जे अब्दुल कलाम से संबंधित प्रसंग को अंशतः शामिल किया जा सकता है, जिसमें उन्होंने एक उपग्रह के प्रक्षेपण में असफल होने पर उस प्रोजेक्ट का मुखिया होने के नाते उस कार्य की संपूर्ण जिम्मेदारी अपने हिस्से में ले ली थी, ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक भी अपने विद्यार्थी के संपूर्ण कृत्यों की विरलता एवं अविरलता को स्वयं का प्रस्फुटन सुनिश्चित करें। शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य तकनीकी युक्त शिक्षण प्रविधियाँ के प्रयोग से उत्तम अधिगम परिणामों की प्रभाविता को सुनिश्चित किया जा सकता है। तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र एवं संप्रेषण कौशलों के प्रयोग से शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य संबंधों में निकटता आती है। कोठारी कमीशन की रिपोर्ट (1966) में देखा गया है कि अधिगम व्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए तकनीकीयुक्त अनुप्रमाणित प्रविधियों के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया जाना अति आवश्यक है जो शिक्षक व छात्रों के मध्य अन्तःक्रिया की सफलता के साथ-साथ ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक पहलुओं के विकास को विस्तारित करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक-छात्र संबंध को 'गुरु-शिष्य परंपरा' की विशेषताएँ

- गुरु का सम्मान
- व्यक्तिगत विकास
- ज्ञान का आत्मसात
- शिष्य की भूमिका
- गुरुकुल प्रणाली
- मौखिक परंपरा

आधुनिक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति

भारत के मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कथन है कि ‘विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत उपहार है, हमें इसे बिगाड़ना नहीं चाहिए। तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र आधुनिक कौशलों के व्यापक दृष्टिकोण को व्यावहारिक रूप से निर्धारित करता है। शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र एवं प्रविधियों के प्रयोग से अपने शिक्षण कौशल क्षमता, व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि कर सकता है एवं कंप्यूटर, रेडियो, टेलीविजन, ऑडियो, वीडियो, लर्निंग मैनेजमेंट टूल, इंटरनेट तथा तरह-तरह के डिजिटल उपागमों के प्रयोग से शिक्षण व्यवस्था को बालकों की आवश्यकताओं, क्षमताओं, योग्यताओं एवं रुचियां के

अनुसार तत्पर किया जा सकता है। अध्ययनरत शिक्षार्थी भविष्य रूपी राष्ट्र के स्वरूप एवं दिशा का निर्धारण करते हैं। यदि उनको पढ़ाने वाले शिक्षक तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र से परिपूर्ण होंगे तो बच्चे 'बिना बोझ के शिक्षा' को ग्रहण करेंगे। तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र से परिपूर्ण शिक्षक आमूल-चूल परिवर्तन की दिशा को निर्धारित करते हुए विद्यार्थियों की प्रतिभाओं की खोज, उनकी बौद्धिक क्षमताओं के अनंत को जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्य व चरित्र के विकास की भूमिका निभाने में अधीरता के साथ कार्य कर सकते हैं। एडगर डेल का 'अनुभव शंकु मॉडल' बहुइंद्रिय अनुदेशन एवं श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को प्रत्यक्ष अनुभव से लेकर अमूर्त चिंतन की उच्चतम अवस्था तक ले जाता है। शिक्षक द्वारा अपनी शिक्षण प्रक्रिया में प्रयुक्त तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र और शैक्षणिक सामग्री के प्रयोग द्वारा छात्रों को क्रियात्मक, वास्तविक एवं स्थाई अनुभव प्रदान किया जाता है। यह बहुइंद्रिय 3D मॉडल शिक्षक की सहायता के साथ-साथ विषयवस्तु के अधिगम, धारण एवं प्रत्यास्मरण करने की क्षमता, एवं निष्क्रिय से सक्रिय अनुभवों में वृद्धि करता है। ब्लूम टैक्सनॉमी (1969) भी स्तरीय कौशल एवं संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक प्रक्रियाओं की अंत:क्रिया के पुनर्गठन को प्रोत्साहित करती है। वर्तमान शिक्षकों को प्राय: मानकों और पाठ्यक्रम की आवश्यकता के अनुरूप समय सारणी का निर्माण करने एवं शिक्षण क्रियाकलाप में सहायता प्रदान करती है। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के खंड 24.4 के अनुसार तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र, शैक्षिक व्यवस्था को एकीकृत प्रारूप प्रदान कर रही है, जिसमें शिक्षार्थियों की पल-पल की प्रगति के साथ-साथ ही शिक्षक विविध प्रकार के तकनीकी कार्यक्रम जैसे दीक्षा, स्वयं, एवं ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षक स्वत: अपने ज्ञान का संवर्धन कर सकता है। शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए लर्निंग गेम्स, ऑग्मेन्टेड रियलिटी, वर्चुअल रियलिटी, वर्चुअल लैब्स को विकसित किया जा रहा है एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु उच्च गुणवत्ता वाली ऑनलाइन शिक्षण सामग्री (DIKSHA) का सृजन किया जा रहा हैं।

परिस्थितिगत विश्लेषणात्मक अध्ययन से प्राप्त सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विवरण

भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षक-छात्र संबंध, और आधुनिक तकनीक के संयोजन से शिक्षा का समग्र विकास संभव है, जिसमें सकारात्मक प्रभाव जैसे नैतिक मूल्यों का संचार, सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास, और प्रभावी शिक्षण विधियाँ शामिल हैं। हालाँकि, नकारात्मक प्रभाव जैसे पारंपरिक मूल्यों का ह्रास, तकनीकी निर्भरता, और वैश्वीकरण से सांस्कृतिक पहचान का क्षरण भी हो सकता है। यह संयोजन तभी सफल हो सकता है। जब पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीकों को संतुलित रूप से एकीकृत किया जाए और शिक्षक व छात्रों को इन दोनों के सही महत्व से अवगत कराया जाए।

सकारात्मक प्रभाव

- **नैतिक और चारित्रिक विकास:** भारतीय ज्ञान परंपरा में 'वसुधैव कुटुंबकम' और आत्म-सुधार जैसे मूल्य सिखाए जाते हैं, जो शिक्षकों और छात्रों को नैतिक रूप से सशक्त और जिम्मेदार बनाते हैं।

- **समग्र व्यक्तित्व विकास:** पारंपरिक भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना है, जिसमें योग और ध्यान जैसे अभ्यास शामिल हैं।

- **सांस्कृतिक पुनरुद्धार:** आधुनिक तकनीक के माध्यम से प्राचीन भारतीय ज्ञान, साहित्य और परंपराओं को विद्यार्थी तक पहुँचाया जा सकता है, जिससे उनमें अपनी संस्कृति के प्रति गौरव और जुड़ाव उत्पन्न होता है।

- **प्रभावी शिक्षण:** तकनीक छात्रों को आकर्षित कर सकती है, जबकि पारंपरिक गुरु-शिष्य संबंध ज्ञान के गहरे और व्यक्तिगत हस्तांतरण को सुनिश्चित करता है।

- **तनाव प्रबंधन:** योग और ध्यान जैसी भारतीय पद्धतियों को शिक्षा में शामिल करने से छात्रों और शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है और तनाव कम हो सकता है।

नकारात्मक प्रभाव

- **तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता:** अत्यधिक तकनीकी निर्भरता से छात्र और शिक्षक दोनों ही पारंपरिक ज्ञान और मानवीय संपर्क से दूर हो सकते हैं।

- **सांस्कृतिक पहचान का ह्रास:** वैश्वीकरण के कारण पश्चिमी प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे भारतीय युवाओं में अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूरी बन रही है और सांस्कृतिक विस्मृति का खतरा है।

- **पारंपरिक और आधुनिक के बीच टकराव:** आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव में संयम, संतुलन और कर्तव्यनिष्ठा जैसे पारंपरिक भारतीय मूल्य पीछे छूट सकते हैं, जिससे शिक्षा का मूल उद्देश्य बाधित हो सकता है।

- **शैक्षिक उपेक्षा:** भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे योग और आयुर्वेद को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान न मिलने से शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा लुप्त हो सकता है।

- **भाषा और ज्ञान का संकट:** संस्कृत और अन्य पारंपरिक भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को समझने की क्षमता में कमी से मूल व्याख्याएँ लुप्त हो रही हैं, जिससे ज्ञान का सही हस्तांतरण मुश्किल हो रहा है।

यह संयोजन तभी सफल हो सकता है जब पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीकों को संतुलित रूप से एकीकृत किया जाए, और शिक्षक व छात्रों को इन दोनों के सही महत्व से अवगत कराया जाए।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकी युक्त शिक्षणशास्त्रीय पद्धति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

जीवन का हर क्षण एक नया अनुभव उद्घाटित करता है। हमारे जीवन के अनदेखे, अनछुए और अनचीत रह गए पहलुओं को भारतीय ज्ञान परंपरा नई संभावनाओं के साथ परिभाषित करती है। अंततोगत्वा भारतीय ज्ञान परंपरा देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्थापित करती है। तकनीकी एवं ज्ञान परंपरा के व्यावहारिक रूप से जीवन, समाज एवं शिक्षा के कार्य क्षेत्र में समावेशिता का समाविष्टन होता है। भारतीय इतिहास एवं परंपरा की बारीकियों को सीखने से भविष्य की दिशा का निर्धारण तय होगा। विद्यार्थियों के मस्तिष्क एवं व्यवहार का समुचित विकास भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र की अनिवार्यता को धारण करता है। विनोबा भावे जी कहते हैं कि 'शिक्षा में मूल्य एवं प्राचीन ज्ञान का अनोखा स्थान है।' शर्मा (2016) के अनुसार,भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ तकनीकीपूर्ण शिक्षणशास्त्र सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में रमने एवं गूढ़ता से शामिल होने की उत्सुकता को बढ़ाता है। इसी श्रृंखला में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005), वर्तमान तकनीकी एवं भारतीय ज्ञान के प्रति अपनी अभिव्यक्ति को उजागर करता हैं। अंततः वर्तमान समय में प्रचलित शिक्षा की नीरस एवं दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों एवं असंतोष से क्षुब्ध विद्यार्थियों के अंतर्मन में मानसिक द्वंद्व एवं नकारात्मक भाव को दर्शाती है। इस पाठ्यचर्या का कहना है कि यदि विद्यार्थियों की मौलिकता एवं रचनात्मता नदारत होने से बचाना है तो उन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र के अंतर्संबंध पर ध्यान केंद्रित करना होगा। पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों को अनुभवयुक्त तकनीकी ज्ञान को स्थापित करने पर बल देना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य पारस्परिक एवं सौहार्दपूर्ण संबंधों का होना अति आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र की उपयोगिता राष्ट्रीय प्रगति, संस्कृति व सभ्यता के उत्थान हेतु धुरी की भांति केंद्रित है। वैश्वीकरण के दौर में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र की समाश्रितता ने दुनिया को क्रांति के अग्रशिखर पर स्थापित कर दिया है। 'वसुधैव कुटुंबकम' से परिपूर्ण वैश्विक समाज की स्थापना से भारतीय ज्ञान परंपरा उत्तेजित विचारों को परिभाषित करता है, जिसमें 'आत्मवत सर्वभूतेषु', 'सर्वे भवंतु सुखिनः', 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई', जैसे आदर्शों को पुनः स्थापित करने पर पुनर्ज़ोर दिया जा रहा है। यूनिसेफ रिपोर्ट (2016) के अनुसार, 'भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान,

कौशल, दृष्टिकोण, मूल्य एवं व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु आवश्यक गुणों को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। अरस्तु का कथन है कि 'ज्ञान, मूल्य एवं भारतीय परंपरा के प्रसारण में तकनीकी की भूमिका को व्यापकता प्रदान की जाए। निश्चय ही उत्कृष्ट व समृद्ध ज्ञान अच्छे नागरिक को निर्मित करता है और इस श्रृंखला से महान देश का निर्माण होता है। 'इंडिया 2020' एक प्रेरणादायक पुस्तक है जो एक नए युग की शुरुआत करने एवं तकनीकी ज्ञान को प्रोत्साहित करने पर बल देती हैं। कलाम साहब का कहना है कि 'टेक्नोलॉजिकल विजन' द्वारा सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक विकास को मजबूत किया जा सकता है (Kalam, 2020)। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की रिपोर्ट 2005 भी प्रभावी शिक्षण पद्धति हेतु मानवीय मूल्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त प्रौद्योगिकी ज्ञान के सृजन को बढ़ावा देती है। जो 21वीं सदी के वैश्विक ज्ञान में तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र को नवाचार की संरचना के रूप में स्थापित करती है। इसी श्रृंखला में गजेन्द्र एवं अन्य (2011) भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा शांति आधारित शिक्षा का समर्थन किया है। यूनेस्को के लिए तैयार जैक्स डेलर्स रिपोर्ट (1996) जिसका शीर्षक यह संकेत देता है कि 'LEARNING: THE TREASURE WITHIN' अर्थात सीखना एक अमूल्य खजाने के रूप में है। जो कहीं ना कहीं भारतीय ज्ञान परंपरा की समग्रता पर ध्यान केंद्रित करता है। इस रिपोर्ट में शिक्षा के चार स्तंभ शिक्षा जानने के लिए, शिक्षा करने के लिए, शिक्षा होने के लिए, शिक्षा के साथ हमेशा रहने के लिए सीखना अर्थात हम एक दूसरे के साथ सहानुभूतिपूर्ण और 'वसुधैव कुटुंबकम' की धारणा के साथ रह सके। यह रिपोर्ट केवल मानवीय मूल्यों पर ही नहीं बल्कि अधिगम के द्वारा आध्यात्मिक, मानवतावादी एवं समाकलित उपागम को भी विकसित करने पर जोर देती है, जो शिक्षा के प्रत्येक आयाम पर प्रभाव डालती है। इस रिपोर्ट के सभी स्तंभ भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र, शिक्षक-शिक्षार्थी के अंतर्वैयक्तिक संबंध को विकसित करने में एक जीर्णोद्धार स्तंभ की भांति कार्य करती है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी का एकीकरण शिक्षकों में आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक चिंतन के साथ-साथ उनकी बहुविषयात्मक शैक्षिक उपलब्धि के संवर्धन को भी प्रसारित करता है। इसी श्रृंखला में इल्माज (2020) के अनुसार, जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी का एकीकरण शैक्षिक क्षेत्र में बढ़ता है, वैसे-वैसे वांछित कौशलों की प्राप्ति भी सामंजस्यपूर्ण तरीके से बढ़ती है। तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र प्रतिभागियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक व सफलता के सकारात्मक स्तर को प्रभावित करता है। एनसीईआरटी के एक शोध पत्र में गार्डिया एवं पुष्पेश (2010) ने प्रौद्योगिकी के इस दौर में वैज्ञानिक और तकनीकी क्रांति के साथ-साथ मूल्य एवं शांति आधारित शिक्षा के प्रसार की बात की है। मूल्य एवं शांति आधारित ज्ञान परंपरा कट्टरता, धर्मान्धता, कटुता, असहिष्णुता, आतंकवाद, विवाद, अलगाववाद, संकीर्णता तथा वैमनस्यता जैसी कलुषित विचारधाराओं को दूर करने में कारगर है।

निष्कर्ष एवं सुझाव:

- तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र के प्रयोग से शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य अंतर्वैयक्तिक संबंध स्थापित किया जा सकता है, जिसके कारण वह बिना किसी झिझक के एक दूसरे के समक्ष अपनी सभी बातों को साझा कर सकते हैं जिससे उनके सामाजिक व व्यावहारिक संबंध भी स्वस्थ होते हैं और उनके सामाजिक कार्यों की स्वीकार्यता के साथ-साथ उनके समाजीकरण की प्रक्रिया में भी वृद्धि होती है।

- यदि भारतीय ज्ञान परंपरा और तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र का अद्भुत सामंजस्य कर दिया जाए तो बच्चों के सामाजिक संबंध एवं वातावरण की प्रक्रिया को संतुलित किया जा सकता है, जिससे उनके अधिगम परिणाम प्रभावी व फलदायी साबित हो सकते हैं।

- विद्यार्थियों के समाजीकरण के प्रक्रिया में अंतर्वैयक्तिक संबंध एवं भारतीय ज्ञान परंपरा महत्वपूर्ण योगदान देती है। अंतर्वैयक्तिक संबंधों के कारण ही बालक सामाजिक संबंधों एवं समाजीकरण की प्रक्रिया मे संवर्धन कर सकता है।

- शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक अंतर अंतर्वैयक्तिक संबंध होने पर ही वह परिवार, समाज, मित्र, कार्यालय, सगे-संबंधियों के साथ स्वैच्छिक रूप से औपचारिक एवं अनौपचारिक स्वस्थ संबंध स्थापित कर पाते हैं।

- भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक विद्यार्थियों के मध्य अंतर्वैयक्तिक संबंधों के मजबूत होने के कारण दोनों में आत्म विकास के स्थल, प्रभावी संचार, सहानुभूति, संघर्ष निराकरण, भावात्मक बुद्धिमत्ता, तदनुभूति, अनुकूलनशीलता जैसे मानवीय गुण विकसित होते हैं।

- तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र के प्रयोग से शैक्षणिक प्रक्रिया को प्रभावित व रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है तथा विद्यार्थियों की अधिगम सलंग्नता एवं अकादमिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।

- तकनीकी युक्त शिक्षणशास्त्र के प्रयोग से शिक्षक अपनी व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि करने के साथ-साथ शिक्षार्थियों के विश्वासपात्र नेता के रूप में स्वयं को निरूपित कर सकता हैं।

- भारतीय ज्ञान परंपरा एवं तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र कि समाश्रितता से शिक्षक विविध अधिगम शैलियों को प्रयुक्त करने के साथ-साथ व्यावसायिक संतुष्टि एवं व्यावसायिक आकांक्षा को विस्तार दे सकता है।

- भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा बहुविषयक ज्ञान की श्रृंखला को स्थापित किया जा सकता है।
- शिक्षक-शिक्षार्थी के मध्य अंतर्वैयक्तिक संबंधों के द्वारा विविध आयामों जैसे उपलब्धि विकास क्षेत्र, कार्यकारी क्षमता, सामाजिक अंतःक्रिया, सहयोगात्मक कौशल एवं सांस्कृतिक सहभागिता में वृद्धि की जा सकती है।
- शिक्षक छात्र के मध्य स्वस्थ अंतर्वैयक्तिक संबंधों द्वारा सामाजिक दक्षता, सामाजिक क्षमता एवं सामर्थ्य व सामाजिक भूमिका का निर्वहन करना सरल हो जाता है।
- तकनीकीयुक्त शिक्षणशास्त्र एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के समाकलित प्रयोग से शिक्षक-शिक्षार्थी के निर्णयन क्षमता, नियमित योजना, सकारात्मक आत्मपहचान, मूल्य कौशल व सांस्कृतिक दक्षता, आत्मनियमन एवं सामाजिक जिम्मेदारी का वहन कर पाना सहज व रुचिकर हो जाता है।

सन्दर्भ

Bloom, B. S. (1969). Taxonomy of educational objectives: The classification of educational goals : Handbook I, Cognitive domain. New York: McKay.

Elfert, M. (2015). UNESCO, the Faure report, the Delors report, and the political utopia of lifelong learning. European Journal of Education, 50(1), 88-100. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000246393

Gupta, A., & Singh, M. (2016). Building effective teacher-student relationships: A key to holistic education. Journal of Educational Psychology, 10(3), 214-230. https://doi.org/10.1016/j.jedupsy.2016.03.005

Kalam, A.P.J.A. (2020). India 2020. Penguin Books India PVT, Limited.

Kumar, N., & Rao, L. (Eds.). (2019). Bridging tradition and innovation in education: New perspectives and practices. Academic Press.

Mehta, A. C. (1994). Education for All: Enrolment. Journal of Educational Planning and Administration, 8(1), 63-79.

National Institute of Education. (2017). Innovations in Indian education: Embracing the future while preserving the past (Report No. 2017-45). National Institute of Education.

Patel, R., & Mehta, S. (2020). Integrating technology in education: Challenges and opportunities. International Journal of Educational Technology, 25(4), 123-135. https://doi.org/10.1016/j.edutech.2020.04.007

Sharma, P. (2018). The essence of Indian knowledge systems: Ancient wisdom for modern times. Wisdom Publications.

Education Commission (1966): Education and National Development: Report of the Education Commission 1964-66, Government of India, New Delhi (reprint: NCERT 1971).

National Education Policy 2020 (pp. 1–107). (2020). [MHRD]. Government of India. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

National Curriculum Framework for School Education 2023 (Government Version 1.0; pp. 1–628). (2023). NCERT. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/infocus_slider/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf

गार्डिया, ए० एवं पाठक. पी० (2010). शांति शिक्षा एवं विद्यालयों में शांति संस्कृति की अवधारणा, भारतीय आधुनिक शिक्षा. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 30(4), 45-51. https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha/April_2010.pdf

पाठक, एस० के० (2016). शांति शिक्षा. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 36(4), 5-18. https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha/bas_april_2016.pdf

सिंह, जी०आर०, मंगल, एस० एवं बंसल, वाई० (2011) विश्व शांति एवं भावी शिक्षा, शोध लेख. विश्व शांति एवं भावी शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, भागलपुर, पृ. 65.